Fourteenth Loksabha

Session : 9
Date : 24-11-2006
Participants : Advani Shri Lal Krishna,Tripathy Shri Braja Kishore,Rijiju Shri Kiren,Sarma Dr. Arun Kumar,Singh Shri Prabhunath,Gao Shri Tapir,Malhotra Prof. Vijay Kumar,Chaliha Shri Kirip,Dasgupta Shri Gurudas,Singh Shri Mohan,Salim Shri Mohammad,Azmi Shri Iliyas,Yadav Shri Devendra Prasad,Mukherjee Shri Pranab

an>

Title : Reported statement made by the Ambassador of China on Arunachal Pradesh.

MR. SPEAKER: Now, we come to matters of urgent public importance after the Question Hour. Shri L. K. Advani, the hon. Leader of the Opposition.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Please sit down. I will try to accommodate as many hon. Members as possible. We have all agreed to a certain way of functioning. Therefore, please cooperate with the Chair. These are important issues that are being raised in the House.

श्री लाल कृण आडवाणी (गांधीनगर): माननीय अध्यक्ष महोदय, चार दिन पूर्व चीन के राट्रपति जी भारत आए थे और कल तक वे भारत में थे। उनके आगमन के अवसर पर उनके राजदूत ने ऐसा वक्तव्य दिया जिसके कारण अरुणाचल प्रदेश के लोगों को और देश की अखंडता तथा एकता के लिए प्रतिबद्ध पूरी जनता को बहुत दुःख हुआ। इन लोगों को धक्का लगा क्योंकिकभी भी पूर्व काल में इस प्रकार की महत्वपूर्ण यात्रा के पूर्व ऐसा वक्तव्य नहीं हुआ। जब मुझे स्वयं राट्रपति जी से मिलने का अवसर मिला तब भी मैंने कहा और मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं प्रशंसा करता हूं कि जिस प्रकार भारत और चीन के संबंधों में विगत वर्ों में सुधार होता रहा है इसमें एक कन्ट्रीब्यूटरी फैक्टर यह रहा है कि कभी भी चीन की ओर से या हमारी ओर से यह नहीं कहा गया है कि यह कोर इश्यू है और जब तक कोर इश्यू तय नहीं होता तब तक बाकी बातों में नॉर्मलसी नहीं हो सकती। इस कारण सीमा ि ववाद रहते हुए भी हम बाकी मामलों में आगे प्रगति करते गए।[r10]

मैं मानता हूं कि उनकी इस बार की यात्रा से भी उस मामले में लाभ हुआ है। वित्त मंत्री यहां बैठे हैं, सदन के नेता बैठे हैं, आजकल वह विदेश मंत्री हैं और इसीलिए मैंने इस ढंग से कहा कि हमें आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार का वक्तव्य कैसे आया कि अरूणाचल भी चीन का हिस्सा है। इसी कारण मैंने कल के लिए यही नोटिस दिया था कि मैं सदन में यह बात उठाना चाहता हूं क्योंकि मैं मानता हूं कि इस प्रकार का वक्तव्य कभी भी आये तो अरूणाचल की जनता के संतोा के लिए और देश भर की जनता को भी आश्वस्त करने के लिए न केवल सरकार को उसका प्रतिवाद करना चाहिए, बल्कि सदन को भी उसका प्रतिवाद करना चाहिए।

उसके बाद मुझे सरकार की ओर से कहा गया कि अभी एक दिन है, वैसे कल वह मुम्बई में थे, इसलिए अगर इसे कल न उठाया जाए तो उचित होगा। प्रोपराइटी की बात है, लेकिन मैं उसे मानने के लिए तैयार था, मुझे उसमें कोई बड़ी बात नहीं लगती थी। लेकिन मैंने सरकार के सामने अपनी यह इच्छा रखी कि मैं स्पीकर साहब को कह सकता हूं कि मैं आज इसका प्र ाश्न नहीं करता हूं, क्योंकि यह सरकार की इच्छा है कि उनके यहां होते हुए यह बात न रखी जाए। लेकिन मैं इस शर्त पर जोर नहीं दूंगा, अगर सरकार इस बात के लिए तैयार होगी कि पूरा सदन एक संकल्प करे कि अरूणाचल भारत का अभिन्न अंग है। जिस मंत्री महोदय से मैंने बात की, वे संसदीय कार्य मंत्री अभी यहां नहीं है। उन्होंने यह नहीं कहा कि यह संभव नहीं है, उन्होंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री जी से बात करके आप तक बात पहुचाऊंगा। लेकिन उसके बाद उनसे कोई बात नहीं हुई और कल यह मामला नहीं उठा, क्योंकि और बातों के कारण सदन आगे नहीं चल सका।

मैं आपका आभारी हूं कि आज आपने मुझे इस बात को उठाने का अवसर दिया। मैं इस संदर्भ में दो-तीन छोटे-छोटे सवाल पूछकर अपनी बात खत्म करूंगा। क्योंकि अगर प्रधानमंत्री जी और विदेश मंत्री की चीनी राट्रपति जी से जो बातचीत हुई है और समझौते हुए हैं, उनके बारे में जब कभी वक्तव्य देंगे तो उस पर विस्तार से चर्चा हो सकती है। इस समय इस प्रश्न को उठाने का मेरा उद्देश्य मुख्य रूप से अरूणाचल के सवाल से संबंधित है और मैं मानता हूं कि ऐसे अवसरों पर उस क्षेत्र की जनता के बारे में जरूर सोचना चाहिए। संयोग ऐसा है कि उस क्षेत्र से निर्वाचित लोक सभा के दोनों सदस्य हमारी पार्टी के हैं और उन्होंने कल सार्वजनिक रूप से इस बात पर चिंता प्रकट की कि इसका प्रतिवाद क्यों नहीं होता। इस मामले में हमारा चीन से जो सीमा का विवाद है, उसको मैं इस सवाल से कुछ अलग करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, 8 नवम्बर, 1962 को इस सारे चीनी आक्रमण के सवाल को लेकर उस समय इमर्जेन्सी लागू की गई थी। उस सवाल को लेकर तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जो बात अरूणाचल के संदर्भ में कही, उसका भााण मेरे पास है। मगर मैं कुछ ही हिस्सा मैं सदन के सामने उद्धृत करना चाहूंगा। बाकी उनका बहुत लम्बा भााण था। उन दिनों अरूणाचल राज्य अलग नहीं बना था। अंग्रेजों के समय से उसे 'नेफा ' कहते थे - नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेन्सीज। नेफा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि चीन के लोग आरोप लगाते हैं कि हमने उस पर कब्जा किया है। उन्होंने कहा "They have laid stress sometimes on the fact that we have occupied this area of NEFA, or a large part of it since we became independent." अर्थात भारत जब स्वतंत्र हुआ, उसके बाद इन्होंने इस पर कब्जा किया है। जैसे मानो कि पहले जब यहां अंग्रेजों का राज था, तब यह भारत का हिस्सा नहीं था, भारत के स्वतंत्र होने के बाद हमारी सरकार ने पंडित नेहरू के नेतृत्व में इसे आकुपाई किया है। This is the allegation . मैं सीमा विवाद पर जो हमारे मतभेद हैं, उनसे इनको अलग करके रखता हूं क्योंकि पंडित जी ने स्वयं कहा था That is a curious statement. लेकिन यह अजीब बात है, हमने कब्जा किया है। उन्होंने पहले मैकमोहन लाइन का उल्लेख करते हुए कहा था कि 1913-14 से यह माना जाता था कि हिमालय वॉटरशैड जो है, वही हमारी भारत और चीन के बीच सीमा है और सन 1913-14 से लेकर वही भारत का हिस्सा थी। उसके अलावा जो महत्वपूर्ण बात है जिसके साथ स्वाभाविक रूप से अरुणाचल के लोग जुड़े हुए होंगे। पंडित जी ने कहा कि

> "Apart from that, when we became independent we did one thing. We naturally wanted these tribal people in the frontier areas to share our independence. The British largely left them to their own resources and interfered only when there was some trouble."

अंग्रेजों के शासन के समय इस क्षेत्र मे रहने वाले जो ट्राईबल्स थे, ये अपने-अपने रिसोर्सेज से जो करें, वह करने दें, अंग्रेज उसमें कुछ नही करता था। वहां अगर कोई समस्या पैदा होती थी तब अंग्रेज थोड़ा हस्तक्षेप करता था।

> "But there is no doubt that the British considered their frontier to be the McMahon Line. They did not have a full-fledged administrative apparatus there. On gaining Independence we were naturally anxious to develop these areas as we were trying to develop other areas of India. We tried,therefore, not only to introduce our administration there …"

अंग्रेजों ने तो एडमिनिस्ट्रेशन का भी स्ट्रक्चर नहीं रखा। हम न केवल प्रशासन वहां पर लाये,

> " We tried, therefore, not only to introduce our administration there but schools, hospitals, roads, etc. It is this which, the Chinese say, represents our occupying that area."

अर्थात जो हमने वहां पर जनता का विकास और कल्याण करने की कोशिश की, उसे ही वे हमारा कब्जा करना कहते हैं, ऑक्यूपेशन कहते हैं। इस संदर्भ में मुझे लगा कि इस प्रकार का बयान अगर किसी चीनी प्रवक्ता की तरफ से आता है, तो शिटाचार के कारण हम चुप रहें, यह कोई ठीक बात नहीं है। हमें इसका प्रतिवाद करना चाहिए और इसीलिए मेरा पहला प्रश्न ि वदेश मंत्री जी से होगा कि हमारी जितनी भी बातचीत हुई और सभी लोगों ने बातचीत की, प्रधान मंत्री से लेकर विदेश मंत्री तक सब लोगों ने बातचीत की, इस अरुणाचल के सवाल को चीनी राट्रपति जी से उठाया या नहीं उठाया, यह मैं जानना चाहता हूं।

दूसरा सवाल मैं पूछना चाहता हूं कि पूर्वकाल में अगर कोई भी डिप्लोमेट, कोई भी एम्बैसडर ऐसा कोई काम करता है जो अनुचित माना जाता है, जो लगता है कि यह ठीक नहीं है तो क्या इस बार यहां पर जो चीनी राजदूत हैं, उनके वक्तव्य देने के बाद विदेश मंत्रालय ने उसका नोटिस लेकर, उन्हें बुलाकर क्या इस बात के लिए भर्त्सना की कि यह वक्तव्य आपको नहीं देना चाहिए था। यह गलत था। मेरे ये दो प्रश्न हैं जिनका मैं विदेश मंत्री जी से उत्तर लेना चाहूंगा। पहला यह कि किसी प्रमुख मंत्री ने या प्रधानमंत्री ने या आपने उनसे क्या इस संदर्भ में सवाल उठाया । दूसरा सवाल कि राजदूत ने जो वक्तव्य दिया, उसका नोटिस भारत सरकार ने, विदेश मंत्रालय ने लिया कि नहीं लिया और लिया तो फिर उनकी क्या प्रतिक्रिया थी, वह भी बताएं। इसके अलावा एक वही मांग है कि आज मैं विश्वास करता हूं कि मंत्री जी जरूर कहेंगे कि हम अरुणाचल को भारत का हिस्सा मानते हैं लेकिन जिस प्रकार की परिस्थिति पैदा हुई है, खासकर यहां चीन के राट्रपति जी आए हैं, चार दिन रहे हैं और इस विाय में देश ने तथा संसद ने कुछ नहीं कहा है।[r11]

अध्यक्ष जी, सदन की ओर से मेरी यह मांग है कि उपयुक्त यही होगा कि यहां इस प्रकार का एक संकल्प हो, जिसमें भूमिका के रूप में यह बात कही जाये या न कही जाये, यह मैं सरकार पर छोड़ता हूं। मैं यह भी समझता हूं कि उपयुक्त यही होगा कि संकल्प यह कहे : In view of certain statements made recently by Chinese spokesman, this House affirms that Arunachal Pradesh is a part and parcel of India. लेकिन उस पहली प्रस्तावना या भूमिका में अगर सरकार को दिक्कत होती है तो मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है, केवलमात्र हम सदन में इस मत के नाते इसे अफर्म करें लेकिन मैं समझता हूं कि : It would be an appropriate response to what the impression has been created till now by various spokesmen.

अध्यक्ष जी, मैं यह भी मांग करूंगा कि चीनी राट्रपति के यहां आने पर जो बातचीत हुई है, उसके बारे में विदेश मंत्री बयान दें.।

MR. SPEKAER: I have received similar notices from several other hon. Members. I will mention their names. Shri Braja Kishore Tripathy, Shri Kiren Rijiju Dr. Arun Kumar Sarma, Shri Prabhunath Singh, Prof. Vijay Kumar Malhotra and Shri Kirip Chaliha. Only their names would be recorded.

… (*Interruptions*)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली): अध्यक्ष जी, अरुणाचल के सांसद को बोलने का चांस दें।

श्री मोहन सिंह (देवरिया) अध्यक्ष जी, मैं भी कुछ कहना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : आपने नोटिस नहीं दिया है।

…(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप वेट करिये कि मैं आपको मौका देता हूं या नहीं? I am only mentioning the names of those who have taken the trouble of giving notices.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Shri Mohan Singh, you are becoming impatient. I do not know why.

… (*Interruptions*)

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज, बिहार): अध्यक्ष जी, दो-दो मिनट दे दीजिये।

अध्यक्ष महोदय : एक ही बात है। आपके लीडर ऑफ दी अपोज़ीशन बोल चुके हैं।

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY (PURI): You should allow two or three minutes. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You support the Leader of the Opposition. You have to associate yourself. He has elaborately said as we expect from him.

… (*Interruptions*)

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : Please allow me. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: He has raised the entire issue.

… (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय : आप लोग मेहरबानी करके बैठ जाइये। Please sit down.

… (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय : क्या आप लोगों ने यह बात सोची है कि बोलने के लिये नोटिस देना चाहिये था।.

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : Hon. Speaker, Sir, the distorted statement made by the Chinese Ambassador to India about the Arunachal Pradesh is most unfortunate and unwarranted. Arunachal Pradesh is an integral and inalienable part of India. The Government should also clarify this. I am supporting the demand of the Leader of the Opposition. This House should make a unanimous Resolution. If it is necessary, the Government should come forward with this type of Resolution. It is necessary for the House to adopt such a Resolution. … (*Interruptions*) This is also regrettable that the Government of India has not lodged any formal objection to this statement. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: He has said it. You associate with the Leader of the Opposition.

… (*Interruptions*)

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : How is this happening when a foreign dignitary is visiting our country? This has also happened sometime back. Some other Ambassador had also made certain remarks….… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: I am sorry, I will not allow.

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : Now, the Chinese Ambassador has also made this type of remark. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Please cooperate.

Shri Kiren Rijiju.

… (*Interruptions*)

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : Is it our softness or weakness or goodness that we are remaining silent? They should behave properly. They are foreign dignitaries. They are our guests. They are in our own soil. They are embarrassing and insulting us. How will we tolerate that? … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Our guests did not do that. Please do not do that. The President of China did not say that.

… (*Interruptions*)

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : I am not making any reference to Mr. President of China. I am just making a reference to the Ambassador of China to India. … (*Interruptions*)

MR. SPEKAER: The Chinese Ambassador is not our guest.

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : When we have good relations with China… … (*Interruptions*)

MR. SPEKAER: Shri Kiren Rijiju.

Nothing else should be recorded.

(Interruptions) ... *

MR. SPEAKER: Do not misuse the opportunity, Shri Tripathy. We have always developed the system of associating with the statement. There is no good of repeating. Please do not repeat. I am sorry. This is not fair. Every word has been spoken by the Leader of the Opposition. I am very sorry, Shri Tripathy. You are not being fair to me.

… (*Interruptions*)

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : The Government should also take the hard line when a comment is made about our own land. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Nothing else will be recorded. Do not record anything else.

*(Interruptions) ...**

MR. SPEAKER: You are only repeating what the Leader of the Opposition has said. It does not help us.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Just repeating what the Leader of the Opposition has said does not help us. Please put forward additional points, if you have any.

श्री कीरेन रिजीजू (अरुणाचल पश्चिम) : मैं इस सदन की मर्यादा का ध्यान रखते हुए और दोनों देशों के संबंधों की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए एक दो बातें कहना चाहता हूं। माननीय आडवाणी जी ने स्पट तौर पर विस्तार से बात कही है। मैं अपनी भावनाएं व्यक्त करना चाहता हूं। बहुत बातें कही गई हैं कि अरुणाचल हिन्दुस्तान का हिस्सा है। हमने कभी भी यह नहीं कहा है कि यूपी भारत का हिस्सा है, केरल भारत का हिस्सा है, हरियाणा भारत का हिस्सा है। मैं तो यहां तक मानता हूं कि अरुणाचल ही हिन्दुस्तान है और हिन्दुस्तान ही अरुणाचल है। इसको कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। मैं इस सदन में इस भावना को व्यक्त करते हुए यह बात कहना चाहूंगा कि 1962 में हमारे बहादुर सिपाहियों ने अपनी जो कुर्बानियां दी हैं, अपनी जान दी है, उसको भी याद रखना चाहिए। लता मंगेशकर ने वह गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगो जरा याद करो कुर्बानी' गाया जब नेफा को ऑक्यूपाइ किया, कितने लोगों ने अपनी जान दी, वह भी याद करना

---

* Not recorded

चाहिए। मैं कहना चाहूंगा कि अरुणाचल की आज जो हालत है, उस समय 1962 की हालत और आज की हालत में ज्यादा फर्क नहीं है। पूर्वोत्तर और अरुणाचल के बारे में पंडित नेहरू ने कहा था -My heart goes to the people of Assam, क्योंकि नेफा असम का हिस्सा था। वह छोड़ चुके थे, हार चुके थे लेकिन मैं यह बात कहना चाहूंगा कि अरुणाचल की जनता देश के प्रति अपना प्रेम, देश के प्रति अपना जो प्यार है, उसी के कारण आज अरुणाचल की जनता कभी यह नहीं कहती कि हम भारत से अलग होना चाहते हैं।

कुछ लोग कहते हैं लेकिन उन राज्यों को कोई नहीं मांग रहा है, अरुणाचल प्रदेश को हमारा पड़ोसी देश मांग रहा है। फिर भी अरुणाचल की जनता आज गर्व से कहती है कि हम भारत से अलग होना नहीं चाहते हैं और यह सबसे शांतिप्रिय प्रदेश है। जिस हिसाब से भारत सरकार ने इसको नज़रंदाज़ किया है, हमारी भावनाओं को, हमारे विकास को, वह ठीक नहीं है। आज मुद्दा विकास का नहीं है लेकिन विकास देश की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। अरुणाचल एक सीमांत प्रदेश है। यह देश की रक्षा करता है। अरुणाचल के किसी किसी गांव में आज भी चार पांच दिन पैदल चलकर जाना पड़ता है। अभी भारत सरकार कहती है कि रास्ता देने के लिए उतनी जनसंख्या वहां नहीं है। ये सब बातें सुरक्षा से जुड़ी हुई हैं। इसमें हम कहते हैं कि सुरक्षा के मामले में जनसंख्या की बात न करें, वह हमारी टैरिटरी है। वहां विकास होना चाहिए। आज आडवाणी जी ने जो कहा, अरुणाचल की जनता आडवाणी जी के प्रति बहुत आभारी रहेगी कि इस मुद्दे को इस सदन में उठाया है। मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि अरुणाचल प्रदेश की जनता की भावनाओं को समझते हुए आडवाणी जी ने जो प्रस्ताव यहां पेश किया है, उसको सर्वसम्मति से पारित करें। धन्य वाद।

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Please wait.

Please do not repeat, Dr. Sarma. If you have any additional points to make, you can make; otherwise, you may please associate yourself with what he said already. There cannot be a debate.

DR. ARUN KUMAR SARMA (LAKHIMPUR): Sir, I stand to express the solidarity, along with this House, with the people of Arunachal Pradesh. It is not an isolated border issue of Arunachal Pradesh. It is the question of sovereignty of the country. This is a very sensitive issue; we should take it very seriously; and the entire House should adopt a Resolution on this. I fully support what the Leader of the Opposition has said. … (*Interruptions*)

There is one more important issue to which I want to draw the attention of the House. The Chinese had, on various occasions, through the national and international Media, claimed to divert the waters of the River Brahmaputra.

MR. SPEAKER: No. It does not arise here. I will not allow this. Sorry, do not misuse the opportunity given. A specific matter was being raised. Your point may be important, but you may raise it at a different occasion.

DR. ARUN KUMAR SARMA : Okay, I will not raise the issue of diversion of river water.

On that same issue, I will say something more.

MR. SPEAKER: You are not cooperating with the Chair; it is very unfortunate.

DR. ARUN KUMAR SARMA : I am fully cooperating. This is a very sensitive issue.

In 1962 when there was Chinese aggression, our armies were evacuated and withdrawn; the currencies were burnt and the people were also evacuated. That was the situation. [MSOffice12]

MR. SPEAKER: We are only dealing with the statement of the Chinese Ambassador. If I may say so, the hon. Leader of the Opposition has raised it in a proper manner.

DR. ARUN KUMAR SARMA : Sir, I wish to express the anguish of not only Assam but the people of entire Northeast. Yesterday, all the Members of Parliament from Northeastern region strongly resolved to stand with the Government… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Nothing more to be recorded.

*(Interruptions) ... **

MR. SPEAKER: Only Shri Prabhunath Singh's statement will go on record.

*(Interruptions) ... **

---

* Not recorded

MR. SPEAKER: This is the misuse of the opportunity given. I am very sorry.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Only Shri Prabhunath Singh's statement will go on record. Shri Prabhunath Singh, would you like to speak?

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, हमें एक ही मिनट बोलना है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: आप बोलिए, आपका ही रिकार्ड होगा, इनका रिकार्ड नहीं होगा। इनका रिकार्ड होना बंद हो गया है, आप बोलिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह :अध्यक्ष महोदय, दोनों आदमी एक साथ कैसे बोलेंगे?

अध्यक्ष महोदय: इनका रिकार्ड नहीं होगा, आपका ही रिकार्ड होगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: डा. शर्मा जी, यह ठीक नहीं है। आपसे हमने बोला, रिकवेस्ट किया, चेयर का रिकवेस्ट आपलोग मानते नहीं हैं, एक ही बात बोल रहे हैं।[R13]There are so many other issues to be raised. I have a long list of hon. Members who have given notices to raise other important matters. I am informed that there will be a response by the Government. You should not go on saying all these things.

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : This is the most important issue.

MR. SPEAKER: I have said that it is the most important issue. I have never minimized its importance. I am only saying that while raising this issue, do not bring in other matters.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: I do not know what has happened to you, Dr. Sarma, today!

DR. ARUN KUMAR SARMA : Sir, I only want that the Government should immediately come out with a statement so that the country should know the stand of the Government of India.

MR. SPEAKER: This is the third time you are repeating it.

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, माननीय आडवाणी जी ने विस्तार से इस सवाल को रखा है, इसलिए इस पर हमें ज्यादा कुछ नहीं कहना है, लेकिन हम दो बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहते हैं। एक राजदूत के इस तरह के बयान का मतलब यह लगता है कि चाइना के मन में क्या भाव है, यह उजागर हो रहा है। इससे निश्चित तौर पर अरुणाचल के लोगों के मन में गहरा दुख हुआ होगा। इसकी जितनी भी निन्दा की जाए, वह कम होगी, लेकिन हम एक बात से सरकार को सचेत करना चाहते हैं। इस समय चाइना से हमारे रिश्ते मजबूत हो रहे हैं, अच्छे हो रहे हैं, इसकी सबको प्रसन्नता है, लेकिन इससे भी अच्छे रिश्ते उस समय थे, जिस समय पंडित जवाहर लाल नेहरु जी देश के प्रधान मंत्री थे। उस समय हिन्दी-चीनी, हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लग रहा था और उन नारों के बीच में 1962 में भारत के साथ में धोखा हुआ। आप सचेत रहें, सरकार को सचेत रहना चाहिए, कहीं इस चाल में अपनी भावना को उजागर करके, कहीं हमें नुकसान पहुंचाने की चाल तो नहीं चली जा रही है।

हम आडवाणी जी के प्रस्ताव से सहमति व्यक्त करते हुए आपसे एक निवेदन करना चाहते हैं कि ऐसे सवालों पर, जैसे मोहन सिंह जी ने कहा, इनका भी विचार जानना चाहिए। बसुदेव आचार्य जी और गुरुदास दासगुप्त जी के विचार भी जानने चाहिए, कि इन लोगों के भी विचार क्या हैं और इसे सदन में लाना चाहिए। इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। …(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Kindly wait for it. I am not calling you now. Those who have given notices will be called first. आप थोड़ा धीरज रखिए, आपको बुलाएंगे। आपने नोटिस भी नहीं दिया है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, आडवाणी जी ने सदन में जो प्रस्ताव रखा है, उसका समर्थन करते हुए मैं दो-**:श्री तापिर गाव (अरुणाचल पूर्व)** तीन क्रोनोलोजिकल इवेंट्स इसके साथ में जोड़ना चाहता हूं। आडवाणी जी ने जो प्रस्ताव रखा है, चाइनीज़ एम्बेसेडर ने जो स्टेटमेंट दिया है, जो इस महीने का स्टेटमेंट है, एक अप्रैल, 2005 को, जिस दिन चाइना के पी.एम. ने आना था, उस दिन भारत [rep14]स्थित चीनी राजदूत ने स्टेटमेंट दिया कि अरुणाचल प्रदेश हिन्दुस्तान और चाइना का डिस्प्युटेड टेरेटरी है।

अध्यक्ष महोदय, 20 अप्रेल को जब प्रधान मंत्री यहां रिपोर्ट दे रहे थे, उस समय मैंने आपके सामने उनसे यह पूछा था कि यह बताया जाए कि आज अरुणाचल कहां है, इस संबंध में वे कुछ बताएं, लेकिन उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। चीन के एम्बैसैडर ने, चीन के प्रेसीडेंट के यहां आने से पहले एक प्रैस-कॉन्फ्रेंस में यह कहा था कि अरुणाचल एक इंटीग्रल पार्ट ऑफ चायना है। इसमें एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर साहब यही कहेंगे कि बायलेटरल टॉक में हमने बायलेटरल बाउंड्री डिस्प्यूट को सुलझाने के लिए प्रस्ताव रखा है। मैं कहना चाहता हूं कि अरुणाचल प्रदेश का इश्यू बाउंड्री डिस्प्यूट से बिलकुल जुड़ा हुआ नहीं है। इस एंटायर टैरीटरी को डिस्प्यूटेड क्लेम करना चायना की एक साजिश है। इसलिए मैं यह चाहता हूं कि जब एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर इसका जवाब दें, तो उसमें इस साजिश का भी उल्लेख करें।

महोदय, मैं एक मिनट का समय और लेते हुए यह कहना चाहूंगा कि जिस समय दिल्ली में एशियन गेम्स चल रहे थे, उस समय हमारे अरुणाचल के कीरेन रिजीजू के संसदीय क्षेत्र के लोगों की ओर से Lion डांस का प्रजेंटेशन हुआ। उस समय चायना ने ऑब्जैक्शन किया और कहा कि यह चीन का डांस है। उस समय गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ने कोई एक्शन नहीं लिया। In 1984, a Parliamentary Delegation consisting of all the Speakers from the country was supposed to go to Beijing. The then Speaker of Arunachal Pradesh Assembly, Shri T.L. Rajkumar को चायना ऐम्बैसी ने वीजा देने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि अरुणाचल के निवासी बिना वीजा और पासपोर्ट के चायना जा सकते हैं और वापस आ सकते हैं। उस समय हमारे सारे डेलीगेट्स को उनके पासपोर्ट पर बिना मोहर लगाए वहां भेजा गया। उस समय भी हमारी हिन्दुस्तान गवर्नमेंट ने कोई कदम नहीं उठाया। उसके बाद 1986 में जब तवांग की सुंदरसंग वैली में हैलीपेड पर चायना का कब्जा हुआ, तब हम लोगों ने, अरुणाचल प्रदेश के स्टूडेंट्स ने यह मामला उठाया। उस पर भी गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ने कोई एक्शन नहीं लिया। ये बहुत से ऐसे क्रॉनौलौजीकल इवेंट्स हैं, जिनके ऊपर गवर्नमेंट ऑफ इंडिया को उसी समय स्टैप्स उठाने चाहिए, लेकिन नहीं उठाए।

महोदय, आज जिन इश्यूज पर हम चर्चा कर रहे हैं, यह चायना गवर्नमेंट का एक टैस्टिंग पीरियड है। मैं कहना चाहता हूं कि र्वा 1914 में मिस्टर मैकमोहन, चायनीज रिप्रजेंटेटिव और तिब्बती रिप्रजेंटेटिव के साथ जो व्यवहार हुआ, उसे मैं दोहराना नहीं चाहता। पं. जवाहर लाल नेहरू, श्री कृणा मेनन और जनरल कौल के साथ 1962 में क्या हुआ, उसे भी मैं दोहराना नहीं चाहता हूं। इस समय मैं सिर्फ यही दोहराना चाहता हूं कि श्री लाल कृण आडवाणी जी ने यहां जो प्रस्ताव रखा है कि हम इस देश के अरुणाचलवासियों के लिए इस सदन में एक प्रस्ताव लाएं, जिसे पं. जवाहर लाल नेहरू जी भी लाए थे कि अरुणाचल प्रदेश हमारा इंटीग्रल पार्ट है। अरुणाचलवासी हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तानी ही रहेंगे।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : अध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ दो बातें कहना चाहता हूं। पहली यह कि 8 जनवरी, 1962 को इस हाउस में नेहरू जी के प्रस्ताव पर खड़े होकर यूनेनिमसली एक स्टेंडिंग रिजोल्यूशन पास हुआ। उसकी चार लाइनें मैं पढ़ना चाहता हूं-

> "With hope and faith, the House affirms the firm resolve of the Indian people to drive out the aggressor from the sacred soil of India, however, long and hard the struggle may be."

आज इस प्रकार की बात होने के बाद, इसका नोटिस न लेना, ठीक नहीं है। जो रिजोल्यूशन उस समय संसद ने एक मत से पारित किया, उसका हम सभी को, इस सदन को और पूरे देश को ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यह एक कमिटमेंट है। मैं दूसरी बात कहना चाहता हूं कि टैरीटरी को डिस्प्यूटेड कहना, एंटी नैशनल है और जब श्री लाल कृण आडवाणी जी ने यह बात कही कि इस

हाउस को इस संबंध में एक रिजोल्यूशन पारित करना चाहिए तो मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि सी.पी.एम. के एक नेता ने यह कहा । …(व्यवधान) *(Interruptions) …**

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा): गलत बयान मत दो। …(व्यवधान)

MR. SPEAKER: That will not be recorded.

… (*Interruptions*)

SHRI BASU DEB ACHARIA : He is misleading the House… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: That will be deleted.

… (*Interruptions*)

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : They made this statement… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: That is deleted.[R15]

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You have had your say. I have now called the name of Shri Kirip Chaliha. Shri Khanduri, please take your seat. You should follow military discipline.

Nothing, except what Shri Kirip Chaliha is saying, would go on record.

*(Interruptions) …**

---

*Not recorded.

SHRI KIRIP CHALIHA (GUWAHATI): Sir, along with other hon. Members of the House I also share the anxiety and I also unequivocally condemned the statement of the Chinese Ambassador… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: He is also entitled to speak. He has given notice. I have called seven hon. Members from your Party.

SHRI KIRIP CHALIHA : Sir, in fact, cutting across Party lines, all the hon. Members from the North-East have unanimously resolved to take a firm stand against this. I would like to compliment the hon. External Affairs Minister for his very prompt and strong response in the matter. …(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: He listened to you without any disturbance. It is being said that it is a serious matter and then if you do not allow others to speak, then it is not proper.

SHRI KIRIP CHALIHA : Sir, about an hour back we had met the hon. Prime Minister with a delegation comprising of Members from the BJP and the CPI(M) also. This matter cannot be treated in a partisan manner and any attempt to treat this matter in a partisan manner is also condemnable. So, let us all please restrain from doing this. We are all one and we should all express our solidarity with the people of Arunachal Pradesh, which we are doing. Nobody should take the monopoly of patriotism which is very condemnable. The Prime Minister has been categorical and I am sure, the UPA will give a proper and fitting response to this problem… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Now, everybody again is standing together. Shri Azmi, please take your seat. I am calling the names on the basis of the time at which the intention to speak has been indicated.

SHRI GURUDAS DASGUPTA (PANSKURA): Sir, there can be no doubt and dispute on the question of Arunachal Pradesh being an integral part of India. There can be no doubt because two Members have been elected from the State of Arunachal Pradesh. They form a part of this House. This very fact indicates, according to our Constitution, that the State of Arunachal Pradesh is represented in the Lok Sabha and is, therefore, a part and parcel of India.

Secondly, the statement of the Chinese Ambassador is uncalled for and it is more so because he did it at a time when the President of China was to visit India. While saying so I have two points to make respectfully to the Members of the Opposition, particularly the BJP.

Sir, the Deputy Leader of the Opposition had read out from a speech of Pandit Nehru in 1962, which means in a very subtle way the dark period of Indo-Chinese friendship, which the country may have forgotten, is being restored… (*Interruptions*)

MAJ. GEN. (RETD.) B. C. KHANDURI (GARHWAL): How can we forget 1962? This should not go on record… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: This is not right. Please do not do it. This is his view.

MAJ. GEN. (RETD.) B. C. KHANDURI : How can we forget 1962?… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You are entitled to give your views and he is entitled to his views.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : Sir, this is unfortunate. This is an element of impatience.

MR. SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions) …**

MAJ. GEN. (RETD.) B. C. KHANDURI : Sir, it does not matter. History has recorded. You may not record it here… (*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DASGUPTA : History has recorded everything… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Shri Khanduri, please do not like that. I would not permit that. You cannot say anything and everything whenever you like. He has not justified it.

* Not recorded.

Moreover, it is very easy to make allegations against the Chair. Please take your seat. Please do not disturb the House.

MAJ. GEN. (RETD.) B. C. KHANDURI : Sir, that comment should be expunged… (*Interruptions*) [R16]

SHRI GURUDAS DASGUPTA : There is a difference between 1962 and 2006. There is a big gap and big difference. The Chinese President has unequivocally said that China is a friend of India. He has unequivocally said that China and India should become partners in the world development and mutual development. The Chinese President also said that discussion is going on at the highest level.

SHRI B. MAHTAB (CUTTACK): Sir, are we discussing about the Chinese President?

SHRI GURUDAS DASGUPTA : It is because he has referred to him. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Do not disturb him. It is not a good habit. Let him say whatever he wants to say. If it is unparliamentary, it will be omitted. I will see to it. Mr. Mahtab, this is not fair.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : My point is simple. The Chinese President or anybody representing the Government in the delegation has not raised any issue on Arunachal Pradesh. Whatever Ambassador has said is uncalled for. Therefore, I do not take it as the opinion of the Chinese Government. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Are you bound by his statement? This is very unfair. I am on my legs. Please sit down. This is not right. You are not bound by his statement.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You are not allowing others to speak. This is not right. This is very unfair. Only you want to have your say and you will not allow others to have their say. You are not bound by his statement. He is not speaking for the Government. You are not bound by his statement. I would request you all to please sit down.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: If I may say so, a very able presentation, as we all know, was made by the Leader of the Opposition. The Leader of the Opposition has put the matter in a proper manner and we are waiting for the response of the Government also. Now, other Members are entitled to speak and because of the importance of the matter, I have allowed them. Seven hon. Members have spoken from this side. I permitted all of them.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: I allowed him to speak. You do not do that. You do not have to agree with him and you are not bound by his statement. This is not right. Mr. Dasgupta, please conclude now.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : If the Government responds to the questions raised by the hon. Leader of the Opposition, I will be delighted and I have no objection over it; and the Government should respond. But while speaking so, I have to make my points clear to the country. Shri Advani is a very able Parliamentarian and that is true. In a subtle form, let us not sow seeds of discontent between the friendship of India and China. Let us not do it.… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You can have a discussion outside, in the Central Hall. I do not mind it.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Nothing will be recorded.

*(Interruptions) …**

MR. SPEAKER: Shri Mohan Singh, in future please give a notice if you want to participate.

… (*Interruptions*)

---

* Not recorded.

श्री मोहन सिंह (देवरिया): अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं।...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि इस राट्रीय महत्व के प्रश्न पर, मेरा नोटिस न रहते हुए भी, आपने मुझे बोलने का समय दिया। मुझे ठीक से याद है कि एक बार अमेरिकी राजदूत ने भारत के किसी आन्तरिक मसले पर एक राजनैतिक वक्तव्य दिया था।[R17] तब प्रधानमंत्री स्तर से उसका न केवल प्रतिवाद हुआ था, बल्कि भारत सरकार ने एक प्रोटेस्ट लैटर अमेरिका की सरकार को भेजा था। यह बात सही है कि चीन के राट्रपति के आने से पहले और एक खास स्थिति में जब भारत के प्रधानमंत्री और यूपीए के चेयरपर्सन तवांग गए थे, उसके बाद ही चीन के राजदूत का इस तरह का राजनैतिक वक्तव्य, मैं समझता हूं कि जो राजनयिक सिद्धांत हैं, उनके सर्वथा प्रतिकूल है। उनके वक्तव्य के कंटेंट का हमारे विदेश मंत्री जी ने कड़ा प्रतिवाद किया, इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं। लेकिन उनके आचरण की कोई निंदा भारत सरकार की ओर से नहीं हुयी, इसके लिए मेरी चिंता है और मैं अपनी चिंता व्यक्त करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, हम सभी जानते हैं कि जब आप के आसन पर माननीय गृह मंत्री जी विराजमान थे, उस समय एक संसदीय शिट मंडल चीन जाना था और उसमें अरूणाचल प्रदेश के भी दो प्रतिनिधि शामिल होने थे। लेकिन चीन की सरकार ने उनको वीजा नहीं दिया और उसके पहले से चीन की सरकार अरूणाचल पर अपना दावा पेश करती रही है, लेकिन हमारा इतिहास साक्षी है कि सन् 1962 के युद्ध के समय बोमडिला पर कब्जा हो गया था, तवांग तक पहुंच गए थे और तेजपुर के कलेक्टर और कप्तान अपनी ट्रेजरी फूंककर वहां से भाग गए थे, उसके निकट उनकी फौज आ गयी थी, लेकिन केवल अरूणाचल प्रदेश की जनता के दबाव के चलते ही चीन की सेना को वापस जाना पड़ा था। जिस तरह सिक्किम की जनता ने सन् 1974-75 में अपने को भारत का हिस्सा मान लिया, उसके बहुत पहले से अरूणाचल प्रदेश की जनता अपने को हिंदुस्तान का हिस्सा मानती रही है। ऐसी हालत में जो लोग स्वेच्छा से भारत के राट्र और संघ के अनुकूल हैं, उसके ऊपर किसी पड़ोसी देश का जो भारत के साथ

अच्छा रिश्ता बनाना चाहता है, वहां के प्रतिनिध का भारत में वक्तव्य देना, मैं ऐसा समझता हूं कि यह बिल्कुल वाहियात बात है और उसकी निंदा की जानी चाहिए।

दूसरी बात, मैं भारत और चीन के रिश्तों के बारे में कहना चाहता हूं कि अभी चीन के राट्रपति जो भारत आए थे, उनकी यात्रा के संदर्भ में एक चर्चा इस सदन में होनी चाहिए। कोई भी भारत और चीन के साथ रिश्ते अच्छे बनाने का विरोधी नहीं है। वाजपेयी जी जब स्वयं सन् 1977 में भारत के विदेश मंत्री हुए, तो उन्होंने पहली यात्रा चीन की ही की थी। भारत और चीन के रिश्तों में सुधार का सिलसिला सन् 1977 के बाद शुरू हुआ और मैं विनम्रतापूर्वक अपने मित्र मल्होत्रा जी से आग्रह करना चाहता हूं कि जो 9 नवंबर, 1962 का इस सदन का भााण है और प्रस्ताव है, जिसके संबंध में बहुत विनम्रता के साथ मैं कहना चाहता हूं कि उस जमाने के एक बड़े सम्मानित सांसद श्री एन.सी.चटर्जी थे, उनका जो भााण है, उसका विशे रूप से जब भारत और चीन के रिश्तों की चर्चा होगी, तो मैं उसका उल्लेख करूंगा। लेकिन जब वाजपेयी जी ने चीन में जाकर तिब्बत को चीन का हिस्सा मानने का काम कर दिया और उस पर मुहर लगा दी, तो मल्होत्रा जी को इन संकल्पों की याद वाजपेयी जी को भी उस समय दिलानी चाहिए थी। हमारा दुर्भाग्य है कि भारत की जो राट्रीय सीमाएं हैं, राट्र और राज्य का उदय होने के बाद वह निश्चित तौर पर परिभाातित हो गयी हैं। लेकिन एक समय था, जब भारत और चीन की सीमा आपस में नहीं मिलती थी। तिब्बत एक बफर स्टेट के रूप में बीच में विद्यमान था, तब कोई हिस्सा इधर है या उधर है, यह प्रश्न ही पैदा नहीं होता था, लेकिन यह सारी स्थिति सन् 1949 के बाद इस देश के सामने पैदा हुयी। किसी भी राट्र की सीमाओं का हजारों वाों में फैसला होता है। डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने जब उसका नाम नेफा था, तो उन्होनें उसका हिंदीकरण उर्वशियम किया था और वे कहते थे कि कृण की सखा उर्वशी तेजपुर की रहने वाली थी। तेजपुर और अरूणाचल प्रदेश से भारत का रिश्ता अनन्त काल का है और एक ऐतिहासिक रिश्ता है। किसी भी दूसरे नाम चाहे मैकमोहन लाइन के नाम से, चाहे अंग्रेजों द्वारा खींची गयी सीमा के बहाने उसके दो फाड़ करने का इंतजाम नहीं किया जा सकता, इसलिए जिन बिंदुओं को आज यहां इस चर्चा के माध्यम से उठाया गया है, उस कंटेंट्स का मैं समर्थक हूं और मैं चाहता हूं कि चीन के राजदूत ने भारत के आंतरिक मामले में जो राजनैतिक वक्तव्य दिया है, उस पर भारत सरकार को अपना कड़ा प्रतिरोध जताना चाहिए और भारत और चीन के रिश्तों के बारे में इस सदन में चर्चा कर दोनों के रिश्तों को सीमा विवाद से परे ले जाकर और प्रगाढ़ संबंध बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात को समाप्त करता हूं। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। [v18]

13.00 hrs.

मोहम्मद सलीम (कलकत्ता-उत्तर पूर्व) : अध्यक्ष महोदय, जिस समय भारत और चीन के संबंधों में सुधार हो रहे हैं और पिछले एक साल के अंदर चीन के प्रधान मंत्री और राट्रपतिहमारे यहां आए और कई एग्रीमैंट हुए, उस समय यह अफसोसनाक है कि दोनों देशों के पॉज़िटिव डैवलपमैंट्स को छोड़कर इस तरह के बिन्दुओं पर चर्चा की जाए ।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप अपनी बात कहिए।

...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : आप हमारी बात सुनिए।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please take your seat. This is not right. He has not said one word against you. He has not said one word against anybody. He has not mentioned anybody's name. प्लीज़, आप बैठ जाइए। May I request you to please sit down? दो-चार मिनट में इनकी बात समाप्त होने वाली है। You are not bound to accept his views.

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपका उनके विचारों से विरोध है, विरोध कीजिए, लेकिन उन्हें बोलने दीजिए।

...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : चीन के राजनयिक का जो बयान है, हमारे दूसरे कोलीग ने भी कहा है कि उसका समय और विाय दोनों ही न भारत के हित में है और न ही चीन और भारत के संबंधों के हित में है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :आप छोड़िए। आप कैसे करेंगे। आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : आप अरूणाचल प्रदेश के विाय में बताइए।...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम :मैं आरएसएस का कैडर नहीं हूं जो उनके कहने से बोलूंगा।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम :आरएसएस जो कहती है वही बोल देते हैं और चाहते हैं कि हम भी वैसे ही करें।...(व्यवधान) हम अपने दिमाग से बोलेंगे।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Maj. Gen Khanduri, please sit down.

... (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You cannot dictate to your Member. You cannot dictate to anybody as to how to speak. आप बैठ जाइए। You cannot dictate.

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं है।

...(व्यवधान)

MD. SALIM : I challenge. ... (*Interruptions*)

मैंने जो वाक्य कहा है, आपकोउसके कौन से शब्द पर आपत्ति है। आप ख्वामख्वाह ही चिल्ला रहे हैं।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please sit down. This is not fair. This is a place where different views are there and different observations are made. There are so many parties. You cannot expect that he will say whatever you want.

... (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय : यह क्या बात है? अगर वे आपकी बात नहीं सुनेंगे तो आप क्या बोलेंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री तोपदार, आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: There are different views in this House. You cannot express your views like this. You can controvert it. You have a duty to listen. As you have a right to speak, they have a duty to listen. It cannot be one way that you will speak and not listen to others? How can it be?

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You make your comment at the appropriate time. I am not stopping anybody.

… (*Interruptions*)

MD. SALIM : You people blame that they move with the pre-conceived notion. They do not live in the present. They live in the past. … (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय : आप जो बोलना चाहते हैं, बोलिए।

...(व्यवधान)

MR. SPEAEKR: This is unfair.

… (*Interruptions*)

MD. SALIM : On all other subjects, you people blame us saying that the Communists live in the past. They say that they have moved to the 21st Century, but we refuse to move to the 21st Century. … (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: If you have anything to say, then please speak afterwards. This is very unfair. You must listen also. You have your full say. Nobody interrupted you.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Nobody interrupted you.

मोहम्मद सलीम : इस सदन में जो भी सदस्य आते हैं, सब देश की सम्प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा के लिए संविधान के नाम पर शपथलेते हैं। यदि कोई सदस्य यह समझता है कि कोई एकता और अखंडता को ज्यादा बल देता है और कोई कम देता है तो यह ...(कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।) है, गलत है।...(व्यवधान) हम सब सदस्य इस देश की सम्प्रभुता, एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए यहां आते हैं और भारत की जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम सबको यहां अपने विचार रखने का अधिकार है। यदि कोई यह समझता है कि वह ज्यादा देशप्रेमी है और दूसरा कम है, तो वह ऐसी सोच रख सकता है, लेकिन सदन में सबको समान अधिकार है। ...(व्यवधान) क्या आप हमें बोलने नहीं देंगे?...(व्यवधान)

MR SPEAKER**:** यह क्या बात है। How can you disturb? [MSOffice19]

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: It is deleted. I will delete that. There is no doubt about that. Please be rest assured.

… (*Interruptions*)

मोहम्मद सलीम : चीन के जो राजनयिक हैं, उनके विाय और समय के दो मीनिंग निकालना गलत है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: आप बोलिये।

...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Salim, please address me.… (*Interruptions*)

मोहम्मद सलीम : अरुणाचल प्रदेश भारत का हिस्सा है, इसमें हमें कोई संदेह नहीं है। इसके लिए हमें रूफ टॉप बार-बार चीखना नहीं पड़ता। दूसरी बात भारत एक टेरीटोरियल इंटीग्रेटी है। हमारी पार्टी इसके लिए टोटली कमिटिड है। इसे नये सिरे से बोलना नहीं पड़ता। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: यह क्या बात है? आप सुनिये कि वह क्या बोल रहे हैं?

...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : मैं सबसे पहले कंडैम करूंगा। ...(व्यवधान) यहां मल्होत्रा जी सीपीएम नेता के नाम से बोले हैं, मैं उसको कंडम करूंगा। ...(व्यवधान) He has no right, no business to bring in the CPI (M) and its leader's statement here. … (*Interruptions*) First, you listen to me. Please allow me to speak.… *Interruptions*)

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : He said so. … (*Interruptions*) You should condemn your leader. … (*Interruptions*)

MD. SALIM : Please listen to me. Then, if you have any reaction, you pass it on. I would challenge you.… (*Interruptions*)

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : You condemn your leader who said that …*… (*Interruptions*)

MD. SALIM : I am not from the BJP. I cannot condemn him.… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Shri Salim, please address the Chair.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: This is very unfair. If you are not listening to the Member, do not ask me to control the House.

मोहम्मद सलीम : मैं विदेश मंत्री जी को बधाई देता हूं। जब चीन के राजनयिक का बयान आया तब हमारे विदेश मंत्री ने उसका खंडन किया। ...(व्यवधान) भारत की जनता की जो वाणी है, सोच है, फिक्र है, उन्होंने उसको बयान किया, इसलिए मैं उनको बधाई देता हूं। दूसरी बात यह है कि चीन के राट्रपति यहां आये, अब उनसे बात हुई या नहीं, आडवाणी जी ने अच्छे लहजे में उनके सामने दो प्रश्न रखे। वह सरकार की जिम्मेदारी है। सरकार उसका जवाब देगी। जहां तक आरोप-प्रत्यारोप की बात है, हमारी पार्टी यह मानती है, हम 1962 से यह कह रहे हैं कि सीमा के बारे में हमारी अपनी मांगें हैं और चीन के अपने कुछ बर्ताव या मांगें हैं जिनसे हमारा मेल नहीं है। इसी को डिस्प्यूट कहते हैं। इसी को विवाद कहते हैं। ...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर) : अरुणाचल में कोई डिस्प्यूट नहीं है। ...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : हम अरुणाचल कहां बोल रहे हैं? ...(व्यवधान)

* Not recorded.

MR. SPEAKER: Shri Salim, please address the Chair.

मोहम्मद सलीम   : मैं समझता हूं कि पूरे विश्व में ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: यह क्या बात है? Will you decide what he should say? This is an amazing thing that one Member will decide what the other Member will have to say!

… (*Interruptions*)

मोहम्मद सलीम   : आपकी और हमारी सोच में अंतर है। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Topdar, please sit down.

मोहम्मद सलीम   :वर्ल्ड वाइज सिविलाइज्ड मैनर यह है कि जब इस तरह के दो व्यक्ति, दो देश कोई पोजीशन लेते हैं, तो उसे एक्रॉस दी टेबल बैठकर, डिसकशन करके समझौता करना पड़ता है। इसलिए हमने उस समय भी कहा कि बातचीत से इस बात का हल होगा। इसका हल बोली से होगा, गोली से कभी भी नहीं हुआ और न ही होगा। इस बात को मैं मानता हूं कि पिछले दिनों दोनों देशों के बीच वार्तालाप आगे बढ़ा है। ...(व्यवधान)

SHRI L.K. ADVANI : Sir, I am grateful to the hon. Member for having yielded the floor. The point is that broadly, I think, the whole House would like India and China to improve relations and we are doing it. So, let it not be viewed in that light. Suppose, for instance, anyone says that Kashmir is a disputed territory, what is our reaction? We do not agree to that view. We immediately react saying that it is not a disputed territory. There may be disputes about some problems in Kashmir.… (*Interruptions*) Yes, there are disputes about some problems in Kashmir. Yes, there may be.… (*Interruptions*) Therefore, to say that it is a disputed territory is highly objectionable.… (*Interruptions*)

MD. SALIM : You have made your observation. This is what I am telling. That analogy cannot be brought in here.… (*Interruptions*)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन   : आपके भााण से हो जायेगा। ...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम   : हम आपको बोल रहे हैं। ...(व्यवधान) Please do not even equate the example of Sikkim and Arunachal Pradesh. Arunachal Pradesh is ours since Independence. Sikkim was an independent State. उनके राज्य की जनता हमारे साथ आई। आज जब चीन उसे तसलीम कर रहा है जैसे हमने तिब्बत को तसलीम किया, जैसे वाजपेयी जी ने तसलीम किया, उसी तरह चीन भी आज सिक्किम के बारे में तसलीम कर रहा है। It is a positive development.

MR. SPEAKER: Please conclude.

मोहम्मद सलीम   : अभी हमारा सवाल यह है कि हम इसे विह्प आउट करते हैं, तो सीमा के उस पार भी ऐसे लोग हैं, जो भारत और चीन के अच्छे समझौते नहीं चाहते। सीमा के इस पार भी कुछ ऐसे लोग हैं जो भारत और चीन के अच्छे संबंध नहीं चाहते। ...(व्यवधान)

श्री गुरुदास दासगुप्त (पंसकुरा) : हिन्दुस्तान में भी हैं। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: I can tell you that I will not allow any further debate on this. Shri Azmi is to speak now. I have called you.

मोहम्मद सलीम : ऐसे लोग बैठे हैं जो नहीं चाहते कि भारत और चीन के बीच अच्छे संबंध हों। जहां तक अरूणाचल प्रदेश की जनता का मामला है, वे भारतीय हैं। यह हमारी पार्टी का स्टेटमेंट है। वहां हमारी जो आबादी है, हमारी जो जनता है, हमारे जो आबादी बहुल इलाके हैं, उनके बारे में कोई डिस्प्यूट नहीं है, लेकिन जो भी विवाद है, उसे हमें आपस में बैठकर सुलझाना पड़ेगा और जो लोग यह समझते हैं कि इसे जंग से हल कर सकते हैं, उन्हें यह बात माननी होगी। This is blown out of proportion. Please don't do that.

MR. SPEAKER: It should not be a matter of one-way traffic of putting forth views in this House. So many views are there. That is why there are so many parties in the House and if you are not allowing them to speak, it is not correct.

श्री इलियास आज़मी (शाहाबाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया है।

MR. SPEAKER: This has become a debate. I will not allow any more debate on this. This is too much. All other matters cannot be raised. Everyone wants to speak on the same subject. It is not fair.

श्री इलियास आज़मी : अध्यक्ष महोदय, नेता विरोधी दल, माननीय श्री लालकृण आडवाणी जी ने जिस भावना से यह बात यहां रखी है, उस भावना की कद्र और ताईद करता हूँ। इसके साथ ही मैं अपने विदेश मंत्री जी से चन्द प्रश्न पूछना चाहता हूँ।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: There will be a debate on the statement regarding the Chinese President's visit.

श्री इलियास आज़मी : अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से यह जानना चाहूंगा कि जब चीन के राट्रपति के भारत आने से एक दिन पहले चीन कि राजदूत ने इतना खतरनाक बयान दिया, तो आपने चीन के राट्रपति के सामने इस मामले को क्यों नहीं उठाया? आप कह सकते हैं कि वह हमारे मेहमान थे। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि इसके दो-चार दिन आगे-पीछे ही जब पाकिस्तान से भी मेहमान भारत आए थे, तब आपने मुम्बई का मामला पूरी ताकत से वहां उठाया और मुम्बई की बम धमाके की घटना के बारे में सबूत दिए थे। मैं सरकार से यह जानना चाहता हूँ कि क्या हमारी पुरानी धार्मिक मान्यता - समरथ को नहीं दोा गुसाईं - भारत सरकार ने भी अपना लिया है कि अमेरिका दुनिया भर में चाहे जो करे, हम नहीं बोलेंगे और चीन हमारे देश के बारे में चाहे जो करे, चाहे जो कहे, हम नहीं बोलेंगे? मैं इस सवाल का जवाब सरकार से अवश्य चाहूंगा?

MR. SPEAKER: Now, the whole debate is becoming degenerated.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर): अध्यक्ष महोदय, आज एक बहुत ही संवेदनशील और राट्रीय महत्व के विाय पर यह सदन चर्चा कर रहा है।...(व्यवधान) इस राट्रीय महत्व के सवाल पर संसद में कहीं से कोई बंटवारा नहीं दिखना चाहिए क्योंकि यह राट्रीय महत्व का ही नहीं वरन् एक बहुत ही संवेदनशील सवाल भी है। पूरा सदन इस बात से सहमत होगा कि चीनी राजदूत द्वारा जिस प्रकार और जिस समय यह बयान दिया गया, वह घोर आपत्तिजनक, दुर्भाग्यपूर्ण और प्रतिवाद के लायक है। मैं समझता हूँ कि इस विचार से पूरा सदन सहमत होगा क्योंकि चीनी राजदूत ने दुस्साहस किया है। इस तरह के बयान से कहीं न कहीं हमारे देश की संप्रभुता की ओर उंगली उठती है और दूसरों की हिम्मत और साहस बढ़ता है। किसी राजदूत की क्या हैसियत है? यह एक सम्प्रभु देश है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि किसी भी व्यक्ति को यह शक नहीं होना चाहिए कि अरूणाचल प्रदेश हमारे देश का अभिन्न अंग है और अभिन्न अंग रहेगा। चीनी राजदूत के इस बयान का तत्क्षण खंडन करने के लिए मैं विदेश मंत्री जी को धन्यवाद और बधाई देना चाहूंगा।

श्री छेवांग थुपस्तन (लद्दाख): अध्यक्ष जी, मैंने भी इस विाय पर बोलने के लिए नोटिस दिया हुआ है। कृपया मुझे भी बोलने के लिए अवसर दिया जाए। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इस विाय पर सारी बात हो चुकी है।

...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Yes, hon. Minister, would you like to respond? I am not compelling you.[R20]

.... (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय: आप बैठ जाएं।

श्री छेवांग थुपस्तन :अध्यक्ष महोदय, मैंने भी नोटिस दिया है।

अध्यक्ष महोदय: आपका नोटिस इस सम्बन्ध में नहीं है। इस तरह बोलने से कुछ नहीं होता इसलिए आप बैठ जाएं।

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI PRANAB MUKHERJEE): Sir, I would just like to clarify a couple of points. First of all, I would like to assure the hon. Leader of the Opposition that on Monday or Tuesday I am going to lay the joint statement, as per the practice, which was issued by the Chinese President and the Indian Prime Minister. That will be laid on the Table of House, along with the 13 Agreements which have been signed, as per the practice. If the hon. Members want to have a discussion on it and if you permit, as per the rules and procedure of the House, it can be discussed.

So far as the issue of Arunachal Pradesh is concerned, I think, it was not necessary to raise it in this format because the very next day I made it quite clear that Arunachal Pradesh is an integral part of India. Somebody has raised the point whether the Ambassador has been called or whether we have formally lodged a protest or not. When the highest person in the Ministry of External Affairs himself is refuting, these niceties are not required. If the Foreign Minister does not respond then on his behalf somebody from the Ministry of External Affairs respond. Not only that, our Ambassador in Beijing drew the attention of the Chinese authorities and pointed out that this statement should not have come from the Chinese Ambassador just on the eve of the visit. Naturally, their response was that we have not yet received the full text of the statement, we shall ascertain it.

So far as Arunachal Pradesh is concerned, the Resolution of 1962, Statement of Pandit Jawaharlal Nehru and all those are part of history. Everybody knows of it. Therefore, let us not go into this aspect. But at the same time, the fact of the matter is to be kept in view. I am just reminding the hon. Leader of the Opposition as he was very much in the Government at that point of time. In 2003, the then hon. Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee was visiting Beijing. I am not going back to the days of 1977 as Shri Mohan Singh did, he has a grand knowledge of history and he can put the things in historical perspective, but I am just drawing the attention of the House to the very recent happening that occurred between 22nd to 27th June 2003 hon. Shri Vajpayee Ji was visiting Beijing. At that point of time, on 26th of June, there was a transgression. There was a

transgression on the Actual Line of Control in the placed called Asephilla in the Upper Subansiri Region. Naturally, there was a formal protest.

This was also raised in the Monsoon Session of Parliament and the then Minister of External Affairs, Shri Yashwant Sinha, while responding to the questions in the Parliament on 24th of July 2003 told the Parliament that India has taken up the issue with the Chinese side. He further added that this is an area where there are differences in the perception of the LoC between the two sides… (*Interruptions*) Please allow me to complete. Everyone of you have spoken. I will not take more than two minutes.

MR. SPEAKER: Please carry on.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: What was the response of the Chinese side? This fact should be known to us. It is not like that as if this has happened for the first time. It has happened. We may like it or we may not like it. But unfortunately, this has happened. This happened on 24th of July 2003. The Chinese Spokesperson of the Foreign Office stated that Indian people had crossed the Eastern sector of LoC in Arunachal Pradesh and not his forces, that means Chinese forces.[r21]Then he further said that we have noted the relevant report; China does not recognize the so-called Arunachal Pradesh. This is not acceptable to us. We have never accepted this position. Even on the floor of the Parliament, the then Minister of State, Shri Digvijay Singh, had stated; it has been repeated by my colleague Shri E. Ahamed while replying to the questions on the floor of the Parliament that 90,000 square kilometres are illegally occupied by the other side, the Chinese side. But, at the same time, it is equally a fact that during that visit of Shri Vajpayee it was decided that the two sides will designate special representatives and they will work out the mechanism through which the border disputes could be resolved. The fact of the matter is that the agreement of 1914 has not been accepted by China. We have also not accepted the position that McMahon Line is irrelevant. This is the stated position of both sides. But, at the same time, over the years, we have built up the relations. And the hon. Members will recognize that Sikkim became an integral part of India in 1974. But, till 2005, it was not officially recognized by China as an integral part of India. During the visit of the Chinese Prime Minister in April 2005 it was agreed upon; the ground was prepared. I must give credit to the NDA Government that when we were talking of where the border trade post should be there, the offer was that the border trade post should be at Kalimpong on the eastern sector. In 1995 when I was the Foreign Minister, I said: "No, Kalimpong cannot be the border; it should be Nathu La." Accepting Nathu La as border trade post means accepting Sikkim as an integral part of India. Officially it was recognized during the visit of the Chinese Prime Minister in 2005. In diplomacy, these are the processes through which we go. Somebody begins; somebody else also carries it on. Therefore, the question of Arunachal being an integral part of India – so far as we are concerned, so far as this Parliament is concerned – is not a debatable issue at all. The resolution is already there. But even then we have proceeded; we have not stood there by just passing the resolution, we have to move forward. We have moved forward. Ice has been broken. China-India relationship is expanding in trade, commerce, economy and strategic partnership. And the process which began in 2003 –the discussions between the two special representatives are continuing – eight rounds of discussions have taken place. Therefore, my most respectful submission to the hon. Members would be that let us not just create a situation which will

unnecessarily heighten the tension. Let us allow the process to continue. So far as Arunachal is concerned, I think I have made it quite clear that it is an integral part of India and it is going to be so.

MR. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 2.15 p.m.

13.25 hrs.

The Lok Sabha then adjourned for Lunch till fifteen minutes past Fourteen of the Clock.